शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कबीर की प्रासंगिकता : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

प्रा. महिमनराम जी॰ पंडया
एस॰एस॰पी॰जैन कालेज
धांगध्रा, गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

संसार में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए जिन-जिन महापुरुषों ने भी अपने जीवन काल में संघर्ष किया और अपने लक्ष्य में सफल हुए, उनकी प्रासंगिकता प्रत्येक युग में बनी रहती है और तब तक बनी रहेगी जब तक मानव जाति का अस्तित्व रहेगा। भगवान गौतम बुद्ध, पैगम्बर मोहम्मद साहब, प्रभु ईसा मसीह, गुरु नानक देव आदि तमाम ऐसे संत-महात्मा हुए हैं, जिनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उन्हीं की श्रेणी में भक्त कवि संत कबीरदास का नाम भी लिया जा सकता है।

प्रस्तावना

आज धर्म,समाज ,जाति,संप्रदाय के नाम से विखंडित मानव ने विश्व को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। सम्पूर्ण विश्व में आज आतंक और हिंसा फ़ैली हुई है। धर्म के नाम पर फल-फूल रहे अधर्म ने विश्व मानवता को कलंकित कर दिया है मानव अपने स्वार्थ में पागल सा हो रहा है तथा इन्सानियत, मानवता और भाईचारा जैसे मानवीय गुणों को, जीवन-मूल्यों को भूलता जा रहा है। आज मनुष्य के दोहरे व्यक्तित्व, सत्य की उपेक्षा, आंतकवाद, अलगाववाद, सांप्रदायिकता, चरित्रहीन राजनीति, विकृत अपसंस्कृति के कारण देश की एकता और अखंडता को खतरा उत्पन्न हो गया है । ऐसे परिवेश में 'जागते हुए कबीर' ही सर्वाधिक प्रासंगिक है। संसार के समस्त भ्रमों को असत्य को, मिथ्यात्व को चुनौती देती हुई, उन्हें भेदती हुई, ध्वस्त करती हुई, कबीर साहब की अदम्य नैतिक साहस से परिपूर्ण वाणी उनके समय से भी ज्यादा आज प्रासंगिक हो गई है। उनकी वाणी हर समय हर युग के लिए शाश्वत सत्य एवं जीवनमूल्यो को उद्घाटित करने वाली वाणी है। कबीर साहब अंतर्दृष्टि सम्पन्न,युगदृष्टा कवि होने के साथ-साथ आंतरिक जीवन से सम्पन्न महान रहस्यदर्शी सदगुरु संत शिरोमणी भी हैं। जो युगदृष्टा होते हैं, वे युगों के अंधेरे के पार देखने की दृष्टि रखते हैं।

वर्तमान में कबीर की प्रासंगिकता

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कबीर साहब सर्वाधिक प्रासंगिक क्यों हैं ? उनके युग में उनके समकालीन,उनके पहले तथा बाद में उनके संत कवि हुए है। उन्होंने नाम स्मरण,सत्संग की महिमा,ऊंच नीच का विरोध तथा माया को बन्धनकारी बताया है। फिर क्या कारण है कि कबीर साहब उनके बीच से उभर कर पूरे विश्व में इतने लोकप्रिय कैसे हुए ? रवीन्द्रनाथ टैगोरने उनके पद चुन-चुनकर अपनी भाषाओं में अनुदित करना क्यों जरूरी समझा ? कुमार गंधर्व जैसे गायक ने अपने तड़प भरे, प्राण उड़ेलने वाले स्वरों मे क्यों गाया ? इन बातों पर विचार करने पर हम पाते हैं कि आधुनिक संदर्भ में कबीर का

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चिन्तन निम्न प्रमुख कारणों से विशेष उपयोगी है।

भारतीय साहित्य में भाषा, भाव और अभिव्यक्ति के स्तर पर कबीर का कोई जोड़ नहीं है। वे बेजोड़, निराले हैं। समाज की व्यवस्थाओं और विसंगतियों पर खुलकर चोट करना और अपनी बात बेलाग कहने वाला, ऐसा कोई दूसरा नहीं है। असत्य, अलगाव, अन्याय और धर्मान्धता की आंखों में अंगुली डालने वाला कबीर के समान मध्ययुग में कोई दूसरा नहीं हैं, जो टूटे-बिखरे समाज को एकता के सूत्र में बांध सके। निरर्थक कर्मकांड़ों,और पाखंड की ढपली बजाने वाले की खबर लेना ऐसी खरी-खरी सच्ची,दो टूक बात करने का कबीर के सिवाय किसी दूसरे में नहीं था।1

कबीर को आधुनिकता का संवाहक कहा जाता हैं, क्योंकि उन्होंने अन्ध-आस्था की जगह तर्क का आश्रय लिया है और मुक्त चिंतन प्रदान किया है। आज का युग समानता का युग है। कबीर वाणी सबसे पिछड़े,पीड़ित,दबे हुए लोगों को भी नैराश्य कुंठा से बाहर निकालकर उनके भीतर आत्मबल का संचार करती है। कबीर साहब का संदेश जड़ता को तोड़ने वाला तथा चैतन्य का प्रकाश विकीर्ण करने वाला महान संदेश है जिसने, आज से 600 वर्ष पहले जिस प्रकार नैराश्य और कुंठा से संत्रस्त मानव समाज को जीवित रखा था, उसी प्रकार आज भी मानव समाज को आत्मबल प्रदान करने वाला है।

धर्मान्धता, सांप्रदायिकता,हिंसा, हत्या, खून खराबा, जातिवाद,असमानता,भय,आंतक से ग्रसित समूचे समाज के लिये यदि कहीं प्रकाश की किरण या दिशा दिखाई देती है तो वह सिर्फ कबीर साहब में दिखाई देती है।

सांप्रदायिकता के भीषण विस्फोट के क्षणों मे कबीर साहब ही मरहम भी हैं और दिशा भी। तभी वर्तमान दशा में सुधार संभव है, क्योंकि इस समस्या का सबसे पहले सामना उन्होंने ही किया है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक शोषण,अन्याय,अत्याचार के विरूध्ध कबीर साहबका काव्य आज भी तीखा अस्त्र हैं एवं सर्वाधिक प्रभावकारी हैं। पं॰ सुंदरलाल ने कबीर साहब को हिन्दू-मुस्लिम एकता का आदि प्रवर्तक बताया है। उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों को सत्य की राह पर चलने के लिए कहा है-

कहैं कबीर मैं हरिगुण गाउ । हिन्दू तुर्क दोऊ समजाऊ ।

हिन्दू तुर्क का कर्ता एकै । ता गति लखी न जाई ।

हिन्दू क़हत है राम पियारा, मुसलमान रहीमाना ।
आपस में दोऊ लड़े मरत हैं,मर्म न काहू जाना ।

कबीर साहब की दृष्टि में सारे मनुष्य परमात्मा के बनाये हुए हैं, न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान, न कोई छोटा है न कोई बड़ा, न कोई ऊँच है न कोई नीच । सबमें उसी का नूर समाया हुआ है।

अल्लाह एकै नूर उपाया, ताकी कैसी निन्दा।
एक नूर ते सब जग कीया, कौन भला कौन मंदा।

आपसी भेदभाव,छुआछूत तथा आत्महीनता की ग्रंथियों से जकड़ा हुआ व्यक्ति इस यथार्थ को भूल जाता है कि समाज के सभी मनुष्य एक ही तत्व से निर्मित है,एक ही सबका कर्ता है और सबकी नियति एक ही है फिर आपस में भेद कैसा ? और फिर संघर्ष कैसा ? वे स्पष्ट और कुछ कड़े शब्दों में कहते हैं-

एक बूंद मल मूतर, एक चाम एक गुदा ।
एक जोति थै सब उत्पन्ना,कौन सूदा।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एकहि पवन एकहि पानी,एक ज्योति संसारा ।
एकहि खाक गढ़े सब भांडे,एकहि सिरजन हारा ॥

कबीर साहब की प्रासंगिकता आज इसलिए नहीं है कि उन्होने बाहयाडंबरो का विरोध किया बल्कि वे प्रासंगिक इसलिए है कि उन्होने जीवन मूल्यों की बात की।

आचरण की पवित्रता एवं कथनी करनी की एकता पर कबीर साहबने विशेष ज़ोर दिया है । लोग अपने अहंकार के कारण भेदभाव का बर्ताव करते है।

ऊँचे कुल क्या जनमिया,जे करनी ऊँच न होय ।
सुवर्ण कलश सुरा भरा, साधु निन्दे सोय ॥

कर्म के प्रति निष्ठा और समग्र मानव जाति के प्रति प्रेम से ही मनुष्य अपना और पूरे समाज का कल्याण कर सकता है। आज हमारी कथनी एवं करनी मे भेद है।

जैसी मुख से नीकसे, तैसी चले चाल।
पार ब्रह्म नियरा रहे, पल में करे निहाल॥

सत्य की चर्चा तो सभी करते है, परंतु सत्य को अपने आचरण में नहीं उतारते हैं। आचरण से रहित विचार का कोई अर्थ नहीं हैं।

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय ।
कथनी कथ करनी करे, तो विष से अमृत होय॥

कबीर की कथनी एवं करनी में एकता थी। आज चाहे राजनीतिक,धार्मिक,साहित्यिक किसी भी वर्ग के लोग हो,दूसरों की बूराई को देखते हैं। दूसरे को शिक्षा देते हैं,स्वयं अपनी तरफ नहीं देखते हैं,अपना आत्मावलोकन नहीं करते हैं। बिना अपने को बदले समाज को बदलने की बात करते हैं।

कहे कबीर जमाना खोटा ।
मैला हाथ और माँजे लोटा ॥

कबीर साहब ने कहा है कि यदि सुधार लाना है तो पहले अपने में सुधार लाएं। व्यक्ति सुधार ही समाज सुधार है।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजो आपना,मुजसे बुरा न होय॥

कबीर साहब की रचना और आलोचना दोनों के केंद्र में मनुष्य है। मनुष्य मात्र की एकता और समानता उनके चिंतन की केंद्रीय धुरी हैं।

कबीर ईश्वर-प्राप्ति के लिए सभी धर्मों के बाहयाचारों को पूरी तरह अस्वीकार करते हुए अंतःसाधना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। कबीर के इस अस्वीकार की ताकत को विश्लेषित करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं -'सब बाहरी धर्मचारों को स्वीकार करने का अपार साहस लेकर कबीरदास साधना के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।....किसी बड़े लक्ष्य के लिए बाधाओं को स्वीकार करना सचमुच साहस का काम है। बिना उद्देश्य का विद्रोह विनाशक है, पर साधु उद्देश्य से प्रणोदित विद्रोह शूर का धर्म है। उन्होंने अटल विश्वास के साथ अपने प्रेम मार्ग का प्रतिपादन किया। रूढ़ियों और कुसंस्कारों की विशाल वाहिनी से वह आजीवन जूझते रहे, प्रलोभन और आघात, काम और क्रोध भी उनके मार्ग में जरूर खड़े हुए होंगे; उन्होंने असीम साहस के साथ जीता। ज्ञान की तलवार उनका एकमात्रा साधन था, इस अद्भुत शमशीर को उन्होंने क्षणभर के लिये भी रूकने नहीं दिया। वह निरन्तर इकसार बजती रही, पर शील के स्नेह को भी उन्होंने नहीं छोड़ा - यही उनका कवच था। इन कुसंस्कारों, रूढ़ियों और बाहयाचारों के जंजालों को उन्होंने बेदर्दी के साथ काटा। वे सिर हथेली पर लेकर ही अपने भाग्य का सामना करने निकले थे.... वे सच्चे शूर की भाँति जूझते ही रहे।

संदर्भ ग्रन्थ

1 (सं.) डॉ० युगेश्वर, कबीर समग्र, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स, प्रा.लि., वाराणसी, 1996, साखी, 119-120, पृ. 548

2 .वही,पद-300,पृ647

3.वही,साखी,21-4,पृ.289

4.वही,पृ.776

5.वही,पद-402,पृ.690

6.वही,साखी,111-12,पृ.447

7.वही,साखी,67-68,पृ.402

8.वही,साखी,24-5,पृ.293

9. वही, साखी, 111-20, पृ. 447

10. वही, साखी, 109-1, पृ. 444

11. वही, साखी, 109-3, पृ. 445

12. वही, साखी, 109-13, पृ. 445

13. वही, साखी, 22-5, पृ. 289

14. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, (1987), पृ. 120

15. डॉ- युगेश्वर, कबीर समग्र, (1996), पृ. 776

16. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, (1987), पृ. 159

17. डॉ० युगेश्वर, कबीर समग्र, (1996), साखी, 31-7, पृ. 306

18. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर-(कबीर-वाणी, पद-168), (1987), पृ. 270

19. डॉ० युगेश्वर, कबीर समग्र, (1996), साखी, 31-10, पृ. 307